आयुर्वेद विभाग जोधपुर द्वारा दिनांक 28.1.2016 से 31.1.2016 तक जोधपुर में आयोजित मेला "आरोग्यम 2016" में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर की सहभागिता

आयुर्वेद विभाग, जोधपुर द्वारा दिनांक 28.1.2016 से 31.1.2016 तक स्थानीय रावण का चबूतरा मैदान पर एक आरोग्य मेले "आरोग्यम 2016" का आयोजन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी जन-जन तक पहुंचाने के उदेश्य से किया गया। इस मेले में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ने भी औषधियों/जड़ी बूंटियों संबंधी जानकारियों एवं संस्थान की अनुसंधान संबंधी कार्यों को दर्शाने के लिए स्टॉल लगाकर सहभागिता की।

स्टॉल में पोस्टर के माध्यम से संस्थान की शोध गतिविधियों, उपलब्धियों एवं विकसित तकनीकों को प्रदर्षित किया गया । प्रदर्शनी में शुष्क क्षेत्रों के लिए कृषि वानिकी उपज मॉडल्स, टिब्बा स्थिरीकरण में सतही वनस्पतियों का उपयोग, हवा की गति कम करने हेतु सूक्ष्म वायुरोधक संरचनाओं का उपयोग, नमक प्रभावित बंजर भूमि का पुनर्वास, जैव जल निकासी से जल भराव क्षेत्र का सुधार, जल प्रबन्धन, वनीकरण में अपशिष्ट जल का उपयोग, सिंचाई जल प्रबन्धन, उद्गम स्त्रोत परीक्षण, शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्रों में पाये जाने वाले औषधीय पौधों का सर्वेक्षण तथा कृषि-करण, गुग्गल पर नेटवर्क परियोजना वर्धित अविनाशकारी गोंद उत्पादन पद्धति का विकास, कृषि भमि पर कृषि वानिकी परीक्षण, कोमीफोरा वाइटी (गुग्गल) -प्रवर्धन, बीज द्वारा प्रवर्धन, कलम द्वारा प्रवर्धन, पौधरोपण के लिए सूक्ष्म जल संग्रहण क्षेत्र, राजस्थान और गुजरात के जंगलों में कार्बन सीक्वेस्ट्शेन (पृथककरण), राजस्थान के वनों में मिट्टी की विशेषता और उसका वर्गीकरण, रोपण स्टॉक में सुधार, बीज परीक्षण अध्ययन इत्यादि विषयों से संबंधित सूचनाओं को पोस्टर के माध्यम से प्रदर्षित किया गया ।

इनके अतिरिक्त शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर की प्रायौगिक पौधशाला में तैयार रेगिस्तानी क्षेत्र के वृक्ष एवं अन्य औषधीय पादपों के पौधों को भी प्रदर्शित किया गया । रोहिडा (*Tecomella undulata*), कुमट (*Acacia senegal*), नीम (*Azadirachta indica*), खारा जाल

(*Salvadora persica*), खेजडी (*Prosopis cinereria*), रूद्राक्ष (*Eleocarpus ganitrus*), अमलतास (*Cassia fistula*), बादाम (*Terminalia catappa*), अर्जुन (*Terminalia arjuna*), बेल पत्र (*Aegle marmelos*), सेमल (*Bombax ceiba*), शीशम (*Dalbergia sisoo*), को रूट ट्नेर बाक्स में प्रदर्शित किया गया । इनके अलावा काली तुलसी एवं कपूर तुलसी (*Ocimum species*), अश्वगंधा (*Withania somnifera*), दमावेल (*Tylophora asthmatica*), सदाबहार (*Catharanthus roseus*), हड्डी जोड़ (*Cissus quadrangularis*), जीवंति (*Laptadinia reticulata*), चिरमी (*Abrus precatorius*), मरवा (*Origanum majorana*), भृंगराज (*Ecliptsa alba*), हारसिंगार (*Nyctanthes arbor-tristis*), अडूसा (*Adhatoda vasica*), मुलेठी (*Glycyrrhiza glabra*), सतावर (*Asparagus racemosus*), गुडमार (*Gymnema sylvestre*), नरगुंडी (*Vitex negundo*), गिलॉय (*Tinospora cordifolia*), सफेद मूसली (*Chlorophylum borivillianum*) इत्यादि पौधों को भी प्रदर्शित किया गया । वृक्षों से प्राप्त विभिन्न प्रकार के उत्पाद जैसे, सलाई गूग्गल (*Boswelia serrata*), गुगल (*Commiphora wightii*) , बबूल (*Acacia nilotica*) के गोंद, नीम (*Azadirachta indica*) व करंज (*Pongamia pinnata)* के तेल, सतावरी (*Asparagus racemosus*), अश्वगंधा (*Withania somnifera*), सफेद मूसली (*Chlorophylum borivillianum*) की जड़े, सोनामुखी (*Cassia angustifolia*), रतनजोत (*Jatropha curcas*), इत्यादि के बीज, सोनामुखी के पत्ते, पलाश (*Butea monosperma*) के सुखे फूल, बहेड़ा (*Terminalia bellirica*) एवं अरीठा (*Sapindus mukorossi*) के फल आदि का भी प्रदर्शन किया गया । उपरोक्त सामग्री एवं पौधों को आगन्तुकों ने बड़े रूचि से देखा व जानकारी प्राप्त की।

मेले के दौरान संस्थान के निदेशक श्री एन. के. वासु, भा.व.से. ने स्टॉल का अवलोकन किया तथा उचित मार्गदर्शन दिया। श्री वासु ने समापन समारोह के अवसर पर अपने संबोधन में रेगिस्तानी क्षेत्रों में अनेकों औषधियां पाये जाने का जिक्र करते हुए विभिन्न संस्थाओं द्वारा आपसी सामजंस्य के साथ इनके ज्ञान एवं जानकारी तथा अनुसंधान आदि कार्य किये जाने चाहिये की आवश्यकता भी प्रतिपादित की ताकि इन बहुमूल्य औषधीय प्रजातियों का संरक्षण हो सके ।

मेले के दौरान लगायी गयी स्टॉल पर आगन्तुकों को कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने भी संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों तथा विभिन्न प्रकार के वनोत्पाद तथा औषधीय प्रजातियों सहित अन्य पादप प्रजातियों के पौधों के बारे में जानकारी उपलब्ध करायी । इस स्टॉल का संचालन श्री रतनाराम लोहरा, अनुसंधान सहायक-प्रथम तथा श्री महिपाल विश्नोई, अनुसंधान सहायक-द्वितीय ने किया तथा आगन्तुकों यथा किसानों, विद्यार्थियों, प्रदेश भर से आये आयुर्वेद चिकित्सकों आदि को संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों तथा औषधीय पादपों एवं सामग्री सहित अन्य वानिकी विषयों की भी जानकारी दी ।

स्टॉल पर औषधीय पादपों के कृषिकरण, कृषि तकनीक, पौधरोपण, फसल प्राप्ति व भंडारण, उपज एकत्र करना एवं उसके बाद के कार्य (Harvesting & Post Harvesting Operations), पादपों के औषधी के रुप में उपयोग में आने वाले भाग (Parts used), एवं इनके उपयोग से संबंधित जानकारियों को दर्शाते हुए, "कठोर वातावरण में औषधीय पादपों की खेती "(Cultivation of Medicinal Plants in Harsh Enviroment), शतावरी, अष्वगंधा, तुलसी, भूई आवंला, गिलोय, सर्पगंधा के फोल्डर तथा मुलैठी एवं शतावरी जैसी प्रजातियों के पर्चे इत्यादि पत्रकों का वितरण किया। स्टॉल की देखरेख एवं व्यवस्था में श्री तेजाराम का सहयोग रहा ।